nisthadhawani.com info@nisthadhawani.com nisthadhawani

निष्ठा ध्वनि

आपकी निष्ठा, हमारी ध्वनि

सोमवार, 15 जून 2026 से 30 जून 2026, वर्ष : 02 , अंक : 11, मूल्य : रु 02/- Fortnightly RNI NO. DLBIL/25/A3948

बुलडोज़र की गूंज: दिल्ली में अवैध निर्माण पर कार्रवाई, समाधान या सिर्फ़ एक और राजनीतिक प्रदर्शन?

संदीप चौहान। विशेष संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली इन दिनों बुलडोज़र की आवाज़ से गूंज रही है। कहीं सड़क किनारे बने अवैध ढांचे गिराए जा रहे हैं, कहीं फुटपाथों पर वर्षों से फैले अतिक्रमण हटाए जा रहे हैं और कहीं बाजारों में नियमों को ताक पर रखकर खड़े किए गए निर्माणों पर कार्रवाई हो रही है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व वाली दिल्ली की भाजपा सरकार इसे कानून के शासन की स्थापना और राजधानी को व्यवस्थित बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम बता रही है।कानून के नजरिए से देखें तो इस कार्रवाई का समर्थन किया जाना चाहिए। किसी भी सभ्य शहर में सार्वजनिक भूमि पर कब्जा, फुटपाथों का व्यावसायिक उपयोग, नालों के ऊपर निर्माण और स्वीकृत नक्शों के विपरीत इमारतें खड़ी करना उचित नहीं माना जा सकता। दिल्ली की सड़कों पर चलने वाला आम नागरिक वर्षों से ट्रैफिक जाम, अव्यवस्थित बाजारों, पार्किंग संकट और अतिक्रमण की समस्या झेल रहा है। ऐसे में अवैध निर्माणों के खिलाफ कार्रवाई का स्वागत होना स्वाभाविक है।दिल्ली में वर्षों तक कांग्रेस सरकार रही। उसके बाद लंबे समय तक आम आदमी पार्टी की सरकार रही। इस दौरान हजारों अवैध निर्माण खड़े हुए, बाजार फैलते गए, फुटपाथ सिकुड़ते गए और कई क्षेत्रों में तो लोगों को यह तक समझ नहीं आता कि सड़क कहां समाप्त होती है और दुकान कहां से शुरू होती है।

यदि आज स्थिति इतनी भयावह हो चुकी है कि बुलडोज़र चलाने की नौबत आ गई है, तो यह केवल वर्तमान समस्या नहीं बल्कि वर्षों की प्रशासनिक लापरवाही का परिणाम भी है।

लेकिन कहानी यहीं समाप्त नहीं होती।

असल सवाल बुलडोज़र से कम और व्यवस्था से ज्यादा जुड़ा हुआ है।आज जो निर्माण अवैध घोषित कर गिराए जा रहे हैं, वे कल रात अचानक आसमान से नहीं टपके थे। उनमें से कई निर्माण पांच, दस और कहीं-कहीं पंद्रह-पंद्रह साल पुराने हैं। कुछ दुकानों ने धीरे-धीरे फुटपाथ निगल लिए, कुछ इमारतों ने मंजिल दर मंजिल नियमों को चुनौती दी और कुछ बाजारों ने सार्वजनिक स्थानों को निजी संपत्ति समझ लिया।

- सवाल यह है कि जब यह सब हो रहा था तब प्रशासन कहां था?
- क्या नगर निगम के अधिकारी छुट्टी पर थे?
- क्या स्थानीय निरीक्षक आंखें बंद करके बैठे थे?
- क्या संबंधित विभागों को कुछ दिखाई नहीं देता था?
- या फिर उन्हें सब कुछ दिखाई दे रहा था और वे देखने के बावजूद अनदेखा कर रहे थे?
- यही वह बिंदु है जहां चर्चा सीधे पिछली सरकारों तक पहुंचती है।



आज बुलडोज़र ने दीवारें गिराईं, क्या कल मिलीभगत भी गिरेगी?

कोई भी अवैध निर्माण बिना स्थानीय स्तर पर मिली ढील के संभव नहीं होता।

किसी बहुमंजिला अवैध इमारत का निर्माण महीनों तक चलता है। निर्माण सामग्री आती है, मजदूर काम करते हैं, बिजली-पानी के अस्थायी कनेक्शन लगते हैं। यह सब किसी गुप्त सुरंग के भीतर नहीं होता।

ऐसे में जनता के मन में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या केवल निर्माणकर्ता दोषी है?

या फिर उन अधिकारियों, कर्मचारियों और प्रभावशाली लोगों की भूमिका भी जांच के दायरे में आनी चाहिए जिन्होंने समय रहते कार्रवाई नहीं की?

दिल्ली की जनता यह भी देख रही है कि जहां आज बुलडोज़र चल रहा है, वहां कई स्थानों पर कल फिर वही पुराना दृश्य दिखाई देने लगता है।

आज दुकान टूटी।

कल उसी स्थान पर फिर टीन का शेड लग गया।

परसों फिर सामान सज गया।

और कुछ सप्ताह बाद सब कुछ पहले जैसा।

यदि यही होना है तो फिर करोड़ों रुपये खर्च कर चलाए गए इन अभियानों का उद्देश्य क्या है?

यही कारण है कि कई लोग पूछ रहे हैं कि क्या यह स्थायी समाधान है या केवल कैमरों के लिए की गई कार्रवाई?

क्योंकि दिल्ली का अनुभव यही रहा है कि अतिक्रमण हटाओ अभियान आते हैं, तस्वीरें छपती हैं, बयान दिए जाते हैं, फिर कुछ समय बाद वही अतिक्रमण वापस आ जाता है।

यदि सरकार वास्तव में स्थायी समाधान चाहती है तो केवल बुलडोज़र पर्याप्त नहीं होगा।

उसे उस पूरे नेटवर्क पर कार्रवाई करनी होगी जो अवैध निर्माणों को जन्म देता है।

पहला कदम होना चाहिए जवाबदेही।

जिस इलाके में अवैध निर्माण मिला, उस क्षेत्र के संबंधित अधिकारियों की जिम्मेदारी तय होनी चाहिए।

यदि किसी निर्माण को बनने में पांच वर्ष लगे हैं तो यह मान लेना कठिन है कि किसी अधिकारी को इसकी जानकारी नहीं थी।

दूसरा कदम होना चाहिए तकनीकी निगरानी।

आज हर व्यक्ति के हाथ में स्मार्टफोन है। दिल्ली सरकार एक खड़ी हैं।

ऐसा डिजिटल मंच बना सकती है जहां नागरिक अवैध निर्माण की तस्वीर या वीडियो सीधे अपलोड कर सकें।

शिकायत सार्वजनिक हो।

उसकी स्थिति सार्वजनिक हो।

और कार्रवाई भी सार्वजनिक हो।

जब पूरी प्रक्रिया पारदर्शी होगी तो जिम्मेदार अधिकारियों पर दबाव स्वत: बढ़ेगा।

तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कदम है जनता की भागीदारी।

आज ट्रैफिक नियमों के उल्लंघन की जानकारी नागरिक मोबाइल से भेजते हैं। उसी प्रकार अवैध निर्माणों और अतिक्रमण की निगरानी में भी जनता को शामिल किया जा सकता है।

क्योंकि जिस मोहल्ले में अतिक्रमण होता है, वहां सबसे पहले उसके प्रभाव को स्थानीय निवासी ही महसूस करते हैं।

वे जानते हैं कि कहां सड़क घिर रही है।

कहां नाला बंद हो रहा है।

कहां फुटपाथ खत्म हो रहा है।

और कहां नियमों की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।

यदि नागरिकों को निगरानी तंत्र का हिस्सा बनाया जाए तो अवैध निर्माण प्रारंभिक अवस्था में ही रोके जा सकते हैं।

सबसे बड़ा प्रश्न राजनीतिक इच्छाशक्ति का है।

क्या यह अभियान वास्तव में दिल्ली को व्यवस्थित बनाने के लिए है?

या फिर यह केवल एक ऐसा दृश्य है जो कुछ समय तक समाचार चैनलों की सुर्खियां बनकर रह जाएगा?

इस प्रश्न का उत्तर आज नहीं मिलेगा।

इसका उत्तर आने वाले महीनों में मिलेगा।

यदि छह महीने बाद भी उन्हीं स्थानों पर अतिक्रमण वापस नहीं आता, यदि जिम्मेदार अधिकारियों पर कार्रवाई होती है, यदि नई अवैध इमारतें बनने से पहले ही रोक दी जाती हैं, यदि शिकायतों पर तत्काल कार्रवाई होने लगती है, तो माना जाएगा कि सरकार स्थायी समाधान की दिशा में बढ़ रही है।

लेकिन यदि टूटी हुई दुकानों की जगह कुछ दिनों बाद फिर दुकानें खड़ी हो जाती हैं, यदि अवैध निर्माणों का कारोबार फिर उसी रफ्तार से शुरू हो जाता है और यदि बुलडोज़र केवल चुनिंदा दिनों की खबर बनकर रह जाता है, तो जनता इसे राजनीतिक प्रदर्शन से अधिक कुछ नहीं मानेगी।

दिल्ली को बुलडोज़र से ज्यादा व्यवस्था सुधार की जरूरत है।

क्योंकि बुलडोज़र दीवार गिरा सकता है, लेकिन भ्रष्ट मानसिकता नहीं।

वह अतिक्रमण हटा सकता है, लेकिन मिलीभगत नहीं।

वह मलबा साफ कर सकता है, लेकिन प्रशासनिक कमजोरी नहीं।

राजधानी की असली जीत तब होगी जब अवैध निर्माण बनने से पहले ही रुक जाएं, जब अधिकारी कार्रवाई से पहले जिम्मेदारी समझें और जब नागरिक भी अपने शहर को बचाने के अभियान में भागीदार बनें।

SAKRIYA
Aapke liye, Aapke sath... Hamesha !!!

"इलाज पर ध्यान दें, पैसों की चिंता हम पर छोड़ें।"

हेल्थ कार्ड - मेडिकल कैश लोन

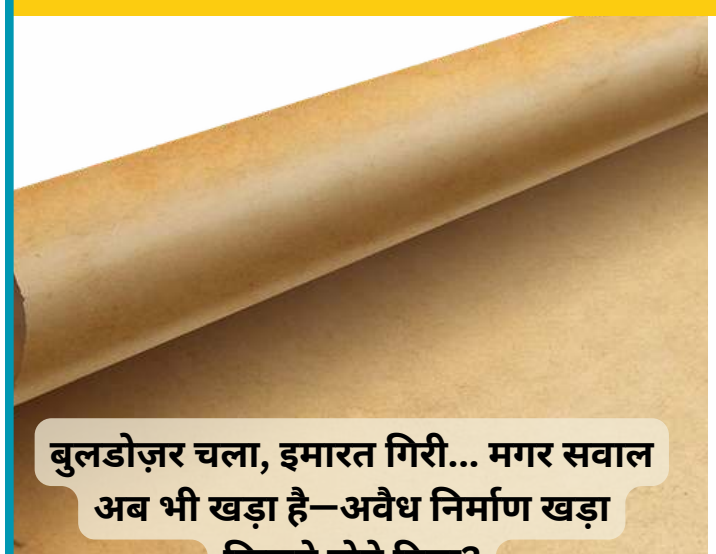
💳 Pay Later सुविधा 👤 पर्सनल लोन 🏢 बिज़नेस लोन 🏠 होम फाइनेंस 🚗 कार लोन 🛡️ इंश्योरेंस सेवाएं

✔️ आसान प्रक्रिया ✔️ न्यूनतम दस्तावेज़ ✔️ त्वरित सहायता ✔️ प्रोफेशनल मार्गदर्शन

📞 +91-9355500193 🌐 https://sakriya.finance

*नियम एवं शर्तें लागू





बुलडोज़र चला, इमारत गिरी... मगर सवाल अब भी खड़ा है—अवैध निर्माण खड़ा किसने होने दिया?

दिल्ली में इन दिनों मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार द्वारा अवैध निर्माणों और अतिक्रमणों के खिलाफ व्यापक स्तर पर बुलडोज़र कार्रवाई की जा रही है। कानून के शासन और राजधानी को व्यवस्थित बनाने की दिशा में इस कदम का स्वागत किया जाना चाहिए। लेकिन इस कार्रवाई के बीच एक सवाल ऐसा है जो हर नागरिक के मन में उठ रहा है—आज जो अवैध निर्माण तोड़े जा रहे हैं, उन्हें बनने किसने दिया?

दिल्ली में अवैध निर्माण और अतिक्रमण की समस्या कोई नई नहीं है। यह समस्या वर्षों से बढ़ती रही है। राजधानी में लंबे समय तक कांग्रेस सरकार रही, उसके बाद लगभग एक दशक तक आम आदमी पार्टी सरकार सत्ता में रही। इन दोनों शासनकालों के दौरान भी अवैध निर्माण, अतिक्रमण, फुटपाथों पर कब्जे, पार्किंग स्थलों का व्यावसायिक उपयोग और नियमों के विपरीत बहुमंजिला इमारतों का निर्माण लगातार बढ़ता रहा।

यदि आज बुलडोज़र चलाने की आवश्यकता पड़ रही है, तो यह केवल वर्तमान समस्या नहीं, बल्कि पिछली सरकारों के दौरान हुई प्रशासनिक ढिलाई, कमजोर निगरानी व्यवस्था और कई मामलों में संदिग्ध चुप्पी का भी परिणाम है। कोई भी अवैध निर्माण एक-दो दिन में तैयार नहीं होता। उसे बनने में महीनों और कई बार वर्षों लग जाते हैं। ऐसे में यह विश्वास करना कठिन है कि स्थानीय प्रशासन, नगर निगम, संबंधित इंजीनियरों और अधिकारियों को इसकी जानकारी नहीं रही होगी। जनता का प्रश्न भी यही है कि यदि निर्माण अवैध था तो उसे शुरुआती चरण में ही क्यों नहीं रोका गया? क्या प्रशासनिक लापरवाही थी, राजनीतिक संरक्षण था या फिर व्यवस्था के कुछ हिस्सों ने जानबूझकर आंखें मूंद ली थीं? इन सवालों का जवाब भी उतना ही जरूरी है जितना बुलडोज़र चलाना।

आज कार्रवाई हो रही है, लेकिन दिल्ली का अनुभव यह भी कहता है कि कई बार जहां आज अतिक्रमण हटता है, वहां कुछ दिनों बाद फिर वही दुकानें, वही ढांचे और वही भीड़ दिखाई देने लगती है। यदि ऐसा फिर होता है, तो जनता यह मानने को मजबूर होगी कि यह अभियान स्थायी समाधान से अधिक राजनीतिक प्रदर्शन था।

इसलिए आवश्यक है कि केवल अवैध निर्माण गिराने तक बात सीमित न रहे। उन अधिकारियों की जवाबदेही भी तय हो, जिनके कार्यकाल में यह सब हुआ। साथ ही ऐसी व्यवस्था विकसित की जाए जिसमें आम नागरिक भी मोबाइल फोटो और वीडियो के माध्यम से अवैध निर्माण की शिकायत दर्ज करा सकें और उस पर हुई कार्रवाई सार्वजनिक रूप से देख सकें।

बुलडोज़र कानून का प्रतीक हो सकता है, लेकिन स्थायी समाधान केवल जवाबदेह प्रशासन, पारदर्शी व्यवस्था और सक्रिय नागरिक भागीदारी से ही संभव है।

आज दिल्ली की जनता केवल टूटी हुई दीवारें नहीं देखना चाहती, बल्कि यह भी जानना चाहती है कि उन दीवारों को वर्षों तक खड़ा रहने देने वाले कौन थे। क्योंकि सवाल सिर्फ यह नहीं है कि अवैध निर्माण गिरा दिया गया। सवाल यह है कि वह बना कैसे, और उसे बनने दिया किसने?

— आरती कुमारी
संपादक

उज़्बेकिस्तान का ´आकाश नृत्य` : अंदिजोन पोल्का की अमर लय है।

इस नृत्य पर भारत की शोध पत्रिका 'सुज़.इन' के निदेशक डॉ. संतोष पटेल ने उज़्बेक विद्वान असरोर अल्लायोरोव से विशेष बातचीत



डॉ. संतोष पटेल

अंदिजोन पोल्का, जिसे इतिहास में 'आकाश नृत्य' के नाम से जाना जाता है, उज़्बेक नृत्य कला की धड़कन है। 'पोल्का' शब्द 19वीं सदी में इसकी तेज़ लय के कारण जोड़ा गया, लेकिन यह नृत्य हज़ारों साल पुराना है। इसकी पहचान है – आग की तरह उर्जा, बिजली जैसे पैर, और तीखे कंधों की हरकतें। इसके कई रूप हैं : रस्सी पर नाचने वालों का, बच्चों का, और महिलाओं का। लेकिन असली रूप पुरुषों का है – यह पौरुष, चपलता और योद्धा भावना का प्रतीक है।

हाल ही में भारत में इस पर एक किताब छपी और रानीखेत में एक बड़ा सांस्कृतिक समारोह हुआ। उसके बाद डॉ. संतोष पटेल ने जाने-माने विद्वान असरोर अल्लायोरोव से इस नृत्य की गहरी जड़ों पर बातचीत की।



असरोर अल्लायोरोव

डॉ. पटेल : भारत में छपी इस किताब और रानीखेत महोत्सव के बाद, आप इस अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक साझेदारी को कैसे देखते हैं?

असरोर अल्लायोरोव : रानीखेत महोत्सव और 'अंदिजोन पोल्का : इतिहास, आधुनिकता और मूल्य' नामक पुस्तक ऐतिहासिक हैं। इससे साबित होता है कि यह विरासत सिर्फ एक देश की नहीं है। भारत और उज़्बेकिस्तान के गहरे पुराने संबंध हैं। जब दुनिया के लोग पोल्का की तेज़ लय के साथ अपने पारंपरिक नृत्यों को गले लगाते हैं, तो लगता है कि हमारी कला एक सार्वभौमिक भाषा बोलती है – खुशी और आध्यात्मिक ऊर्जा की। इससे एक बड़ा शैक्षणिक और सांस्कृतिक पुल बनता है।

डॉ. पटेल : क्या इतनी तेज़ रफ्तार का मतलब यह है कि यह नृत्य 21वीं सदी की देन है?

असरोर अल्लायोरोव : बिल्कुल नहीं, यह एक गलतफहमी है। 'आकाश नृत्य' न तो 21वीं सदी की रचना है और न ही 19वीं की। यह एक प्राचीन धरोहर है – हज़ारों साल पुरानी। पुराने अभिलेखों, पत्थरों पर बनी आकृतियों और मध्यकाल के विवरणों से पता चलता है कि इस नृत्य की लय कई हज़ार सालों में बनी थी। यह उस समय के लोगों के उत्सव और अनुष्ठानों की अभिव्यक्ति थी।



डॉ. पटेल : इसके आंदोलनों के अंदरूनी वैविध्य पर कुछ बताइए, खासकर 'गरुड़ नृत्य' वाले तत्व के बारे में।

असरोर अल्लायोरोव : यह नृत्य विविधताओं और गति के सामंजस्य की उत्कृष्ट मिसाल है। सबसे गहरा तत्व है – गरुड़ नृक्ष की नकल। यह इस्लाम से पहले के समय में हमारे पूर्वजों की प्रकृति-पूजा (टोटेमवाद) से जुड़ा है, जब लोग पवित्र पक्षियों की पूजा करते थे। फैली हुई भुजाएँ और तेज़, चारों ओर देखती निगाहें – यह उड़ते गरुड़ की नकल है। यह आज़ादी, ताकत और उच्च आध्यात्मिकता का प्रतीक है। यही कारण है कि इसका ऐतिहासिक नाम 'आकाश नृत्य' है।

डॉ. पटेल : बाबरी राजवंश के समय में यह नृत्य कैसे बदला?

असरोर अल्लायोरोव : वह समय इस नृत्य की लय के लिए स्वर्ण युग था। पुराने संस्मरण बताते हैं कि सैन्य अभियानों के दौरान यह नृत्य दो काम आता था – एक तो सैनिकों का शारीरिक अभ्यास (वार्म-अप) चपलता के लिए, और दूसरा जीत के बाद उत्सव का प्रदर्शन। जब बाबरी राजवंश ने भारत में अपना साम्राज्य बसाया, तो इस नृत्य के तत्व अपने साथ ले गए। उन्होंने दरबारी प्रदर्शनों को प्रभावित किया और स्थानीय परंपराओं से मिलकर एक नया रंग बनाया।

डॉ. पटेल : असल कलाकार कौन थे? और रस्सी पर नाचने वालों या महिलाओं वाला रूप मूल रूप से कैसे अलग है?

असरोर अल्लायोरोव : यह मूलतः पुरुषों का नृत्य है – एक प्रामाणिक पुरुष नृत्य, जिसमें बड़ी शारीरिक ताकत चाहिए। लेकिन इसके लचीलेपन ने इसे दूसरे रूप भी दिए। रस्सी पर नाचने वालों ने यह रूप अपने संतुलन के लिए बनाया, ताकि ऊँचाई पर लय के सहारे स्थिर रह सकें। बच्चों का रूप चंचल है, महिलाओं का रूप तीखेपन को सुन्दरता में बदल देता है। फिर भी असली पहचान वही प्रामाणिक, ऊर्जावान पुरुष सामूहिक नृत्य है।



डॉ. पटेल : कलाकार क्या पहनते हैं? और उन वस्त्रों में क्या अर्थ छिपा है?

असरोर अल्लायोरोव : पहनावा बहुत सादा लेकिन गहरे अर्थ रखता है। नर्तक साफ सफेद कमीज और गहरे रंग की पतलून पहनते हैं, जिसमें मुलायम चमड़े के जूते होते हैं – इससे तेज़ पैरों की चाल संभव होती है। कमर में एक पारंपरिक कमरबंद कसकर बाँधा जाता है, ताकि तेज़ हरकतों में रीढ़ को सहारा मिले, और सिर पर एक क्षेत्रीय टोपी (कलपक) होती है। सफेद और गहरे रंग का अंतर : आत्मा की पवित्रता और धरती से जुड़ाव का प्रतीक है।

डॉ. पटेल : आज के राष्ट्रीय कला में इस नृत्य का दार्शनिक स्थान क्या है?

असरोर अल्लायोरोव : यह हमारी सांस्कृतिक आत्मा की सबसे सच्ची अभिव्यक्ति है। यह हमारे लचीलेपन, मेहमाननवाज़ी और कभी न हारने वाले आशावाद को दर्शाता है। यह केवल मनोरंजन नहीं है – यह एक जीवित इतिहास है। इसमें प्राचीन पक्षी देवताओं से लेकर शाही दरबारों तक, और अब दुनिया के मंच तक का हमारा सफर समाया है। यह हमारी सामूहिक पहचान है – एक ऐसा राष्ट्र जो दुनिया से खुली बाँहों और ऊँची आत्मा से मिलता है।

डॉ. पटेल : इतनी कम शब्दों में इतनी गहरी बातें बताने के लिए धन्यवाद।

असरोर अल्लायोरोव : मुझे बहुत खुशी हुई। आपने हमारी विरासत को भारतीय मीडिया में एक नई आवाज़ दी – इसके लिए शुक्रिया।

RNI NO. DLBIL/25/A3948
संपादक - आरती कुमारी
सहसंपादक - चिराग
कार्यकारिणी - संदीप एस चौहान
संरक्षक - अनंत श्री विभूषित परमहंस परिव्रजिकाचार्य श्रोत्रिय ब्रम्हनिष्ट महामंडलेश्वर 1008 स्वामी शैलेषानन्दजी महाराज, श्री स्वामी माधवानंद पुरी जी महाराज , श्री राजेंद्र नन्द जी महाराज
सलाहकार- रितेश सिंह राणा, मुखदेव कुमार, धर्मेंद्र कुमार साह
राजनितिक संपादक - धनंजय कुमार सिंह
विशेष संवाददाता - रेशमा गुप्ता , मोहम्मद क़मरूल हसन, आकाश रोहिल्ला, नेहा
संस्थान - निष्ठा धवनि हब प्राइवेट लिमिटेड CIN U60 200DL2025PTC441648। PAN: AAKCN1250C GST: 07AAKCN1250C1ZV
पंजीकृत कार्यालय - D-67, STREET NO. 49, MAHAVIR ENCLAVE, PART 3, UTTAM NAGAR, NEW DELHI, DELHI- 110059
शाखा कार्यालय - C-40/41, Laxmi Nagar, Ganesh Nagar, Pandav Nagar, New Delhi 110092
मुद्रणालय Printing Press - RD PRINTERS PUBLISHERS PVT. LTD. B-48, SECTOR 8, NOIDA, GAUTAM BUDDHA NAGAR, UTTAR PRADESH-201301
संपर्क सूत्र - 7303398731, 7303398732, 7303398733, 7303398734
वेबसाइट - nisthadhawani.com Email - info@nisthadhawani.com

अपना प्रोग्राम को लाइव कराओ और पैसा कमाओ!
IPTV, OTT, SMART TV APP पर अपना न्यूज़ चैनल को लाइव टेलीकास्ट कराएं!
निष्ठा न्यूज
7303398734
nisthadhawani.com nisthadhawani.in nistha.news

सड़क किनारे शराबखोरी का खुला खेल: आखिर प्रशासन की नजर क्यों नहीं पड़ती?

संदीप चौहान। विशेष संवाददाता

दिल्ली के अधिकांश इलाकों में शाम ढलते ही एक ऐसा दृश्य देखने को मिलता है, जो अब लोगों के लिए लगभग सामान्य बन चुका है। शराब के ठेकों के बाहर भीड़ लगनी शुरू हो जाती है। कुछ लोग बोतलें और क्वार्टर खरीदते हैं, वहीं पास में स्थित अंडे, चिकन, चाप, कबाब, नमकीन और जूस की दुकानों पर रुकते हैं और फिर सड़क किनारे, पार्किंग में खड़ी गाड़ियों के अंदर या फुटपाथ के आसपास खुलेआम शराब पीने बैठ जाते हैं

यह दृश्य किसी एक इलाके तक सीमित नहीं है। राजधानी के अनेक बाजारों, मुख्य सड़कों और रिहायशी क्षेत्रों के आसपास यह स्थिति रोज देखने को मिलती है। सवाल यह है कि जब यह सब खुलेआम हो रहा है तो क्या पुलिस और प्रशासन को इसकी जानकारी नहीं है? या फिर सब कुछ जानते हुए भी इसे नजरअंदाज किया जा रहा है?

शाम होते ही शराब के ठेकों के आसपास एक पूरा अनौपचारिक तंत्र सक्रिय हो जाता है। शराब खरीदने वाले लोगों को वहीं गिलास, पानी, बर्फ, नमकीन और खाने-पीने की अन्य सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है। कई स्थानों पर तो ऐसा लगता है मानो सड़क किनारे बिना लाइसेंस के खुले बार संचालित किए जा रहे हों। लोग अपनी कारों में बैठकर शराब पीते हैं, कुछ वाहन के बोनट पर गिलास रखकर जाम छलकाते हैं और कई समूह बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर ही शराब सेवन करते दिखाई देते हैं।



खुले में शराब, खुले में अव्यवस्था—आखिर कार्रवाई कब?

इस स्थिति का सबसे अधिक प्रभाव स्थानीय निवासियों पर पड़ता है। विशेष रूप से महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग स्वयं को असहज महसूस करते हैं। जिन रास्तों से परिवारों को गुजरना होता है, वहीं नशे में धुत लोगों की भीड़ खड़ी मिलती है। कई बार ऊंची आवाज में बातचीत, गाली-गलौज और विवाद जैसी घटनाएं भी सामने आती हैं। ऐसे माहौल में स्वाभाविक रूप से सुरक्षा और सामाजिक मर्यादा से जुड़े सवाल उठने लगते हैं।

कई स्थानीय नागरिकों का कहना है कि शाम के बाद वे अपने बच्चों को अकेले बाहर भेजने से बचते हैं। बाजारों में खरीदारी करने आने वाली महिलाओं को भी असुविधा का सामना करना पड़ता है। समस्या केवल शराब पीने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसके साथ जुड़ा व्यवहार भी सार्वजनिक जीवन को प्रभावित करता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह कोई छिपी हुई गतिविधि नहीं है। यह सब खुलेआम, सार्वजनिक स्थानों पर और प्रतिदिन होता है। ऐसे में यह मानना कठिन है कि पुलिस या प्रशासन को इसकी जानकारी नहीं होगी। जहां रोज दर्जनों लोग शराब पीने के लिए इकट्ठा होते हों, वहां स्थानीय पुलिस की नजर कभी न पड़े, यह बात आम नागरिकों को स्वीकार नहीं होती।

यही कारण है कि लोगों के मन में कई तरह के सवाल पैदा होते हैं। क्या प्रशासन के पास पर्याप्त संसाधनों की कमी है? क्या इसे गंभीर समस्या नहीं माना जाता? या फिर स्थानीय स्तर पर ऐसी गतिविधियों को लेकर उदासीनता विकसित हो चुकी है? इन सवालों का स्पष्ट उत्तर शायद संबंधित विभाग ही दे सकते हैं, लेकिन जनता के बीच असंतोष लगातार बढ़ रहा है।

कानून की दृष्टि से भी यह एक गंभीर विषय है। सार्वजनिक स्थानों पर शराब सेवन को अधिकांश राज्यों में प्रतिबंधित माना जाता है और इसके लिए दंडात्मक प्रावधान मौजूद हैं। यदि नियम स्पष्ट हैं, तो फिर उनका पालन सुनिश्चित क्यों नहीं हो रहा? यही वह प्रश्न है जो बार-बार उठता है।

कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि सार्वजनिक स्थानों पर शराब सेवन केवल सामाजिक समस्या नहीं बल्कि कानून-व्यवस्था से जुड़ा विषय भी है। नशे की स्थिति में वाहन चलाना, सड़क पर विवाद, मारपीट और महिलाओं के प्रति अभद्र व्यवहार जैसी घटनाओं की आशंका बढ़ जाती है। कई बार छोटी-छोटी कहासुनी बड़े झगड़ों का रूप ले लेती है।

इसके अलावा एक और महत्वपूर्ण पहलू है। शराब के ठेकों के आसपास विकसित होने वाला यह पूरा ढांचा अक्सर स्थायी रूप ले लेता है। कुछ दुकानों का कारोबार पूरी तरह ऐसे ग्राहकों पर निर्भर हो जाता है जो वहीं खड़े होकर शराब पीते हैं। धीरे-धीरे यह एक स्थापित व्यवस्था बन जाती है, जिसे हटाना फिर प्रशासन के लिए भी चुनौती बन जाता है।

National Emergency	112
Women Police Helpline	1091
Women in Distress	181
Child Helpline	1098

सड़क किनारे शराबखोरी पर जनता क्या सोचती है?

राजधानी के विभिन्न इलाकों में किए गए एक जन-सर्वेक्षण में सड़क किनारे खुलेआम शराब पीने की बढ़ती घटनाओं को लेकर लोगों ने गंभीर चिंता व्यक्त की है। सर्वे में शामिल अधिकांश लोगों का मानना है कि शराब के ठेकों के बाहर शाम होते ही कई स्थानों पर सड़कें और फुटपाथ अस्थायी "ओपन बार" में बदल जाते हैं, जिससे आम नागरिकों, विशेषकर महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों को असुविधा का सामना करना पड़ता है।

सर्वे के दौरान नागरिकों ने बताया कि शराब के ठेकों के आसपास अक्सर लोग वाहनों में बैठकर या सड़क किनारे खड़े होकर शराब का सेवन करते दिखाई देते हैं। इसके साथ ही आसपास मौजूद खाने-पीने की दुकानों से उन्हें आवश्यक सामग्री और सेवाएं भी उपलब्ध कराई जाती हैं। स्थानीय निवासियों का कहना है कि यह दृश्य लगभग रोज़ देखने को मिलता है, लेकिन इसके बावजूद स्थिति में कोई बड़ा बदलाव दिखाई नहीं देता।

सर्वे में शामिल लोगों का एक बड़ा वर्ग मानता है कि समस्या का समाधान केवल पुलिस कार्रवाई तक सीमित नहीं होना चाहिए। लोगों ने सुझाव दिया कि जिस प्रकार यातायात नियमों के उल्लंघन की सूचना मोबाइल एप और ऑनलाइन माध्यमों से दी जा सकती है, उसी प्रकार सार्वजनिक स्थानों पर शराब सेवन, अव्यवस्था और कानून उल्लंघन की घटनाओं की शिकायत दर्ज कराने के लिए भी एक प्रभावी और पारदर्शी व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए।

कई नागरिकों का मानना है कि यदि लोगों को फोटो, वीडियो और लोकेशन के साथ तत्काल शिकायत भेजने की सुविधा मिले और उस शिकायत पर हुई कार्रवाई की जानकारी भी ऑनलाइन उपलब्ध हो, तो निगरानी व्यवस्था कहीं अधिक प्रभावी बन सकती है। इससे प्रशासन की जवाबदेही बढ़ेगी और लोगों का विश्वास भी मजबूत होगा।

सर्वे के दौरान यह बात भी सामने आई कि अधिकांश लोग सार्वजनिक स्थानों को सभी नागरिकों की साझा संपत्ति मानते हैं। उनका कहना है कि सड़कें, फुटपाथ और सार्वजनिक क्षेत्र आम लोगों की सुविधा के लिए होते हैं, न कि खुलेआम शराब सेवन के लिए। यदि ऐसे स्थानों पर लगातार अव्यवस्था बनी रहती है, तो इसका असर पूरे सामाजिक वातावरण पर पड़ता है

जनता की राय में आवश्यकता केवल समय-समय पर चलने वाले अभियानों की नहीं, बल्कि नियमित निगरानी, त्वरित कार्रवाई और नागरिक सहभागिता की है। लोगों का मानना है कि जब तक प्रशासन और नागरिक मिलकर इस समस्या के समाधान की दिशा में काम नहीं करेंगे, तब तक सड़क किनारे शराबखोरी जैसी समस्याएं पूरी तरह समाप्त नहीं हो पाएंगी।।

सर्वे में शामिल कई लोगों ने अंत में एक महत्वपूर्ण सवाल उठाया

"यदि कानून सार्वजनिक स्थानों पर शराब पीने की अनुमति नहीं देता, तो फिर यह सब रोज़ खुलेआम कैसे हो रहा है?"

यही सवाल आज आम जनता के मन में है और शायद इसी सवाल का जवाब भविष्य में किसी स्थायी समाधान की दिशा तय करेगा।

निष्ठा ध्वनि
आपकी निष्ठा, हमारी ध्वनि
04
सोमवार, 15 जून 2026 से 30 जून 2026

निष्ठा हेल्थ | निष्ठा मनी | निष्ठा ऐस्ट्रो





क्या सचमुच भूतों ने बनाया था यह मंदिर?



भारत रहस्यों, आस्था और अद्भुत स्थापत्य कला का देश है। यहां कई ऐसे मंदिर मौजूद हैं, जिनके बारे में आज भी अनेक रहस्यमयी कहानियां प्रचलित हैं। इन्हीं में से एक है मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में स्थित काकनमठ मंदिर, जिसे लोग "भूतों द्वारा निर्मित विश्व का एकमात्र मंदिर" भी कहते हैं। हालांकि यह एक लोकमान्यता है, लेकिन इस मंदिर की बनावट और इसका रहस्य आज भी लोगों को हैरान कर देता है। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के संरक्षण में है।

क्यों कहा जाता है कि इसे भूतों ने बनाया था?

स्थानीय लोगों के बीच एक बेहद प्रसिद्ध कथा प्रचलित है। मान्यता है कि हजारों भूत-प्रेतों ने मिलकर इस मंदिर का निर्माण एक ही रात में कर दिया था। लेकिन जैसे ही सुबह होने लगी और पहली किरण दिखाई दी, वे निर्माण अधूरा छोड़कर गायब हो गए। इसी वजह से लोगों का मानना है कि मंदिर पूरी तरह से तैयार नहीं हो पाया। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि रात के समय यहां से रहस्यमयी आवाजें सुनाई देती हैं, इसलिए सूर्यास्त के बाद लोग यहां जाने से बचते हैं।

इतिहास क्या कहता है?

इतिहासकारों के अनुसार यह मंदिर 11वीं शताब्दी में कच्छपघात वंश के राजा कीर्तिराज द्वारा बनवाया गया था। राजा ने अपनी रानी कंकावती (काकनावती) के सम्मान में इस मंदिर का निर्माण कराया था, जिससे इसका नाम आगे चलकर काकनमठ पड़ गया।

आखिर यह मंदिर इतना रहस्यमयी क्यों है?

इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता इसकी अद्भुत संरचना है।
इस मंदिर में आधुनिक सीमेंट, सरिया या किसी धातु का इस्तेमाल नहीं किया गया।जब कोई पहली बार इस मंदिर को देखता है तो ऐसा लगता है कि पत्थर बस एक-दूसरे के ऊपर रख दिए गए हैं और कभी भी गिर सकते हैं।
लेकिन हैरानी की बात यह है कि यह मंदिर लगभग एक हजार वर्षों से खड़ा हुआ है।समय-समय पर आए भूकंप, आंधी और प्राकृतिक आपदाओं के बावजूद यह मंदिर आज भी मजबूती से खड़ा है।
यही कारण है कि इसकी तुलना प्राचीन इंजीनियरिंग के एक चमत्कार से की जाती है।
स्थानीय मान्यताओं के अनुसार सूर्यास्त के बाद यहां जाना शुभ नहीं माना जाता।
हालांकि पुरातत्व विभाग और इतिहासकार इन बातों की पुष्टि नहीं करते।
इसे केवल लोककथाओं और जनश्रुतियों का हिस्सा माना जाता है।

15 जून से 30 जून 2026 तक का राशिफल

♈ मेष (Aries)
नए संपर्क बनेंगे और रुके हुए काम गति पकड़ सकते हैं। आर्थिक मामलों में जल्दबाजी से बचें।
शुभ: नए प्रोजेक्ट, यात्रा, नेटवर्किंग

♉ वृषभ (Taurus)
धन और संसाधनों पर ध्यान रहेगा। घर से जुड़े कार्यों पर खर्च बढ़ सकता है।
शुभ: संपत्ति, बचत, परिवार

♊ मिथुन (Gemini)
करियर और निजी जीवन में नई दिशा मिलने की संभावना है।
शुभ: इंटरव्यू, पढ़ाई, व्यापार

♋ कर्क (Cancer)
परिवार और करियर के बीच संतुलन बनाने की जरूरत पड़ेगी।
शुभ: परिवार, स्वास्थ्य, नए अवसर

♌ सिंह (Leo)
शुक्र और आने वाले ग्रह परिवर्तन आपके आकर्षण और लोकप्रियता को बढ़ा सकते हैं। सामाजिक दायरा बढ़ेगा।
शुभ: प्रेम, रचनात्मक कार्य, प्रतिष्ठा

♍ कन्या (Virgo)
काम का दबाव थोड़ा बढ़ सकता है। खुद को अधिक थकाने से बचें।
शुभ: नौकरी, संगठन, योजना बनाना

♎ तुला (Libra)
नई संभावनाएं सामने आएंगी। पुराने विवाद सुलझ सकते हैं।
शुभ: शिक्षा, यात्रा, विस्तार

♏ वृश्चिक (Scorpio)
यह समय गहराई से सोचने और बड़े फैसले लेने का है। साझेदारी और आर्थिक मामलों में सतर्क रहें। शुभ: निवेश, शोध, रणनीति

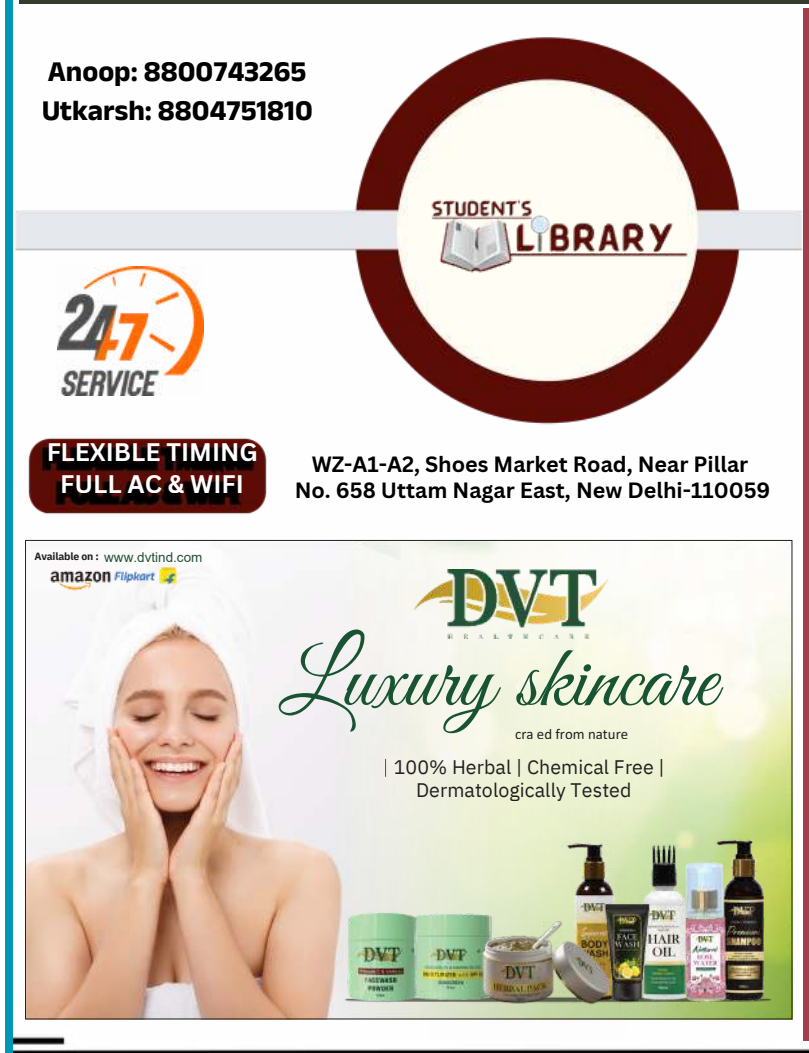
♐ धनु (Sagittarius)
रिश्तों में मधुरता बढ़ सकती है। परिवार और मित्रों के साथ अच्छा समय बिताने का अवसर मिलेगा।
शुभ: रिश्ते, साझेदारी, सामाजिक जीवन

♑ मकर (Capricorn)
दिनचर्या और कार्यक्षेत्र में बदलाव संभव है। नई जिम्मेदारियां मिल सकती हैं।
शुभ: अनुशासन, करियर, स्वास्थ्य

♒ कुंभ (Aquarius)
रचनात्मकता और आत्मविश्वास बढ़ेगा।
शुभ: कला, व्यवसाय

♓ मीन (Pisces)
घर-परिवार और मानसिक शांति पर ध्यान रहेगा। भावनात्मक संतुलन बनाए रखें।
शुभ: परिवार, आध्यात्मिकता





भागदौड़ भरी ज़िंदगी में कहीं पीछे तो नहीं छूट रही आपकी सेहत?

डा.एस के जैन|हेल्थ

आज की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी में इंसान अपने काम, जिम्मेदारियों और भविष्य की योजनाओं में इतना व्यस्त हो गया है कि सबसे महत्वपूर्ण चीज़, यानी अपनी सेहत को ही नज़रअंदाज़ करने लगा है। सुबह से रात तक काम का दबाव, तनाव, अनियमित दिनचर्या और पर्याप्त आराम की कमी धीरे-धीरे शरीर पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही है।
स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि अधिकांश गंभीर बीमारियाँ अचानक नहीं होतीं, बल्कि शरीर पहले से ही छोटे-छोटे संकेत देने लगता है। लगातार थकान महसूस होना, सिरदर्द, नींद पूरी न होना, अपच, पीठ दर्द, तनाव, चिड़चिड़ापन और बार-बार बीमार पड़ना ऐसी समस्याएँ हैं, जिन्हें लोग अक्सर सामान्य समझकर टाल देते हैं। यही लापरवाही आगे चलकर बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकती है।
आधुनिक जीवनशैली ने भी इस समस्या को बढ़ाया है। घंटों मोबाइल और कंप्यूटर स्क्रीन के सामने बैठना, शारीरिक गतिविधियों में कमी, अनियमित खानपान और देर रात तक जागना अब आम बात हो गई है। इसका असर केवल बुजुर्गों पर नहीं, बल्कि युवाओं और बच्चों पर भी दिखाई देने लगा है।विशेषज्ञों का कहना है कि करियर और आर्थिक प्रगति जरूरी है, लेकिन इसके लिए स्वास्थ्य की कीमत नहीं चुकानी चाहिए।यदि शरीर स्वस्थ नहीं रहेगा, तो व्यक्ति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन भी सही तरीके से नहीं कर पाएगा। स्वस्थ रहने के लिए बहुत बड़े बदलावों की आवश्यकता नहीं है। समय पर भोजन करना, पर्याप्त पानी पीना, रोज़ाना कुछ देर टहलना,अच्छी नींद लेना और समय-समय पर स्वास्थ्य जांच कराना छोटी आदतें हैं, जो लंबे समय तक बड़ा लाभ देती हैं।
आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच खुद के लिए भी समय निकालें। क्योंकि काम और जिम्मेदारियाँ हमेशा रहेंगी, लेकिन यदि स्वास्थ्य बिगड़ गया, तो बाकी सब कुछ पीछे छूट सकता है।


तनाव और चिंता कई शारीरिक बीमारियों का कारण बन सकते हैं।

निष्ठा ध्वनि

आपकी निष्ठा, हमारी ध्वनि

05

सोमवार, 15 जून 2026 से 30 जून 2026



अध्यात्म क्या है ? क्या है अध्यात्म के रहस्य?

लेखक : वैभव भारद्वाज

अध्यात्म का अर्थ है स्वयं को जानना, अपनी आत्मा को पहचानना और जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझना। यह किसी एक धर्म, संप्रदाय या पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं है, बल्कि हर व्यक्ति के लिए आत्म-ज्ञान और आंतरिक शांति प्राप्त करने का मार्ग है। अध्यात्म हमें यह समझाता है कि हम केवल नश्वर शरीर नहीं, बल्कि अमर आत्मा हैं।

भगवद्गीता (2.20) में कहा गया है—

"न जायते म्रियते वा कदाचित् नायं भूत्वा भविता वा न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥"

अर्थात आत्मा न कभी जन्म लेती है और न कभी मरती है। शरीर नष्ट हो सकता है, लेकिन आत्मा शाश्वत और अमर है।

अध्यात्म का उद्देश्य ईर्ष्या, लोभ, मोह, अहंकार, क्रोध और भय जैसे आंतरिक विकारों को समाप्त करना है। ध्यान, योग, आत्मचिंतन और निस्वार्थ सेवा इसके प्रमुख साधन हैं।

भगवद्गीता (2.56) में कहा गया है—"दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥"

अर्थात जो व्यक्ति सुख-दुःख, भय, क्रोध और लालसा पर नियंत्रण रखता है, वही स्थिर बुद्धि वाला ज्ञानी कहलाता है।

अध्यात्म का सार यही है कि मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप को पहचाने, वर्तमान में जीना सीखे और आत्मा को परमात्मा से जोड़कर जीवन को सुख, शांति, संतुलन और सार्थकता की दिशा में आगे बढ़ाए। अध्यात्म हमें यह भी सिखाता है कि बाहरी परिस्थितियों को बदलने से पहले स्वयं को बदलना आवश्यक है।



महिलाओं की सुरक्षा: आज की सबसे बड़ी चुनौती



पत्रकार : नेहा गुप्ता



आज के आधुनिक और प्रगतिशील समाज में महिलाओं की सुरक्षा एक गंभीर और चिंताजनक विषय बनी हुई है। एक ओर महिलाएं हर क्षेत्र में सफलता के नए आयाम स्थापित कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर उनके प्रति होने वाले अपराध समाज के लिए एक बड़ी चुनौती बनते जा रहे हैं। महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराध जैसे छेड़छाड़, घरेलू हिंसा, दुष्कर्म और साइबर अपराध लगातार बढ़ रहे हैं। इन घटनाओं के पीछे कई कारण हैं, जिनमें सामाजिक सोच, शिक्षा की कमी, कानून का सही तरीके से पालन न होना और अपराधियों का बेखौफ होना प्रमुख हैं। कई बार पीड़ित महिलाएं समाज के डर या बदनामी के कारण शिकायत दर्ज कराने से भी हिचकिचाती हैं, जिससे अपराधियों का मनोबल और बढ़ जाता है।इसके अलावा, सार्वजनिक स्थानों पर सुरक्षा की कमी, देर रात सुरक्षित परिवहन का अभाव और कार्यस्थलों पर असमान व्यवहार भी महिलाओं की सुरक्षा के लिए खतरा बने हुए हैं। सोशल मीडिया और इंटरनेट के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर अपराध भी एक नई चुनौती के रूप में सामने आया है।इन समस्याओं के समाधान के लिए समाज और सरकार दोनों को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। सबसे पहले, महिलाओं के प्रति समाज की सोच में बदलाव लाना जरूरी है। शिक्षा के माध्यम से लोगों को जागरूक किया जाना चाहिए कि महिलाओं का सम्मान करना हर व्यक्ति का कर्तव्य है। सरकार को भी कड़े कानून बनाने और उनका सख्ती से पालन सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। पुलिस व्यवस्था को मजबूत किया जाना चाहिए और महिलाओं की शिकायतों पर तुरंत कार्रवाई होनी चाहिए। साथ ही, सार्वजनिक स्थानों पर सीसीटीवी कैमरे, बेहतर स्ट्रीट लाइटिंग और सुरक्षित परिवहन की व्यवस्था भी जरूरी है। महिलाओं को भी आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। परिवार और समाज को उन्हें समर्थन और प्रोत्साहन देना चाहिए, ताकि वे बिना डर के अपनी आवाज उठा सकें।

अंततः, महिलाओं की सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

निर्दलीय जनप्रतिनिधि – निर्दलीय सरकार का विचार, क्या बदल सकता है देश की राजनीति का भविष्य?

रिपोर्ट: आकाश रोहिला

देश की राजनीति में वर्षों से राजनीतिक दलों का दबदबा रहा है। चुनाव आते हैं, घोषणाएं होती हैं, वादे किए जाते हैं और फिर अगले चुनाव तक जनता एक बार फिर नई उम्मीदों के साथ इंतजार करती रहती है। लेकिन इसी बीच एक ऐसा विचार भी धीरे-धीरे लोगों के बीच चर्चा का विषय बन रहा है, जो पारंपरिक दलगत राजनीति से अलग रास्ता सुझाता है। यह विचार है – "निर्दलीय जनप्रतिनिधि, निर्दलीय सरकार"।

हाल ही में समाज चिंतक और व्यवसायी नरेंद्र राठी ने इस विषय पर विस्तार से अपने विचार साझा किए। उनका मानना है कि देश की कई समस्याओं की जड़ वर्तमान दलगत राजनीतिक व्यवस्था में छिपी हुई है और इसका समाधान जनता के हाथ में है। नरेंद्र राठी का कहना है कि लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति . जनता में निहित है, लेकिन समय के साथ जनप्रतिनिधियों की जवाबदेही जनता से अधिक राजनीतिक दलों के प्रति होती चली गई। उनका तर्क है कि आज अधिकांश सांसद और विधायक सबसे पहले अपनी पार्टी की नीति और निर्देशों को प्राथमिकता देते हैं, जबकि जनता के हित कई बार पीछे छूट जाते हैं।

राठी के अनुसार, संविधान निर्माण के समय राजनीतिक दलों को केंद्र में रखकर शासन प्रणाली की स्पष्ट परिकल्पना नहीं की गई थी। मूल भावना यह थी कि जनता अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करे और चुने हुए प्रतिनिधि मिलकर नेतृत्व का चयन करें। लेकिन धीरे-धीरे दलगत राजनीति ने पूरे लोकतांत्रिक ढांचे पर मजबूत पकड़ बना ली।उनका कहना है कि यदि जनता अपने क्षेत्र से योग्य, शिक्षित, ईमानदार और समाजसेवा के प्रति समर्पित लोगों को निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनना शुरू कर दे, तो राजनीतिक व्यवस्था में बड़ा बदलाव संभव है। उनका मानना है कि इससे जनप्रतिनिधि किसी राजनीतिक दल के बजाय सीधे जनता के प्रति जवाबदेह बनेंगे।

हालांकि, यह विचार जितना सरल सुनाई देता है, व्यवहारिक स्तर पर उतना ही चुनौतीपूर्ण भी माना जाता है। सबसे बड़ा सवाल यही उठता है कि यदि बड़ी संख्या में निर्दलीय उम्मीदवार जीतकर आते हैं, तो सरकार कैसे बनेगी?

इस पर नरेंद्र राठी का कहना है कि लोकतंत्र का मूल सिद्धांत ही सामूहिक नेतृत्व है। जैसे विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालयों और संगठनों में चुने गए सदस्य मिलकर अपना नेतृत्व चुनते हैं, उसी प्रकार संसद में चुने गए निर्दलीय जनप्रतिनिधि भी मिलकर प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद का चयन कर सकते हैं।

राठी वर्तमान व्यवस्था की आलोचना करते हुए एक प्रतीकात्मक शब्द "लंगड़ा लोकतंत्र" का भी इस्तेमाल करते हैं। हालांकि, वह स्पष्ट करते हैं कि उनका उद्देश्य किसी संस्था पर सवाल खड़ा करना नहीं है, बल्कि लोकतंत्र को और मजबूत करने की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित करना है। उनका मानना है कि जब चुनावी और प्रशासनिक संस्थाओं पर राजनीतिक प्रभाव को लेकर संदेह पैदा होने लगे, तो लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती प्रभावित होती है।

उनकी सोच किसी आंदोलन, विरोध प्रदर्शन या टकराव की राजनीति पर आधारित नहीं है। वह इसे जनजागरण का अभियान बताते हैं। उनका कहना है कि परिवर्तन सड़कों पर संघर्ष से नहीं, बल्कि मतदान के समय सही निर्णय लेने से आएगा।

राठी युवाओं को भी राजनीति से दूर भागने के बजाय उसे समझने की सलाह देते हैं। उनका कहना है कि यदि अच्छे और ईमानदार लोग राजनीति से दूरी बना लेंगे, तो खाली स्थान को कोई न कोई भर देगा। यही कारण है कि उन्होंने "राजनीति" के स्थान पर "राष्ट्रनीति" शब्द को बढ़ावा देना शुरू किया है।

उनके अनुसार, राजनीति अक्सर सत्ता के इर्द-गिर्द घूमती है, जबकि राष्ट्रनीति का केंद्र देश, समाज और नागरिकों का कल्याण होना चाहिए। उनका मानना है कि आने वाले समय में युवाओं को केवल राजनीतिक बहसों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका को समझना होगा।हालांकि, इस विचार के सामने कई व्यावहारिक चुनौतियां भी हैं। वर्तमान चुनावी व्यवस्था में राजनीतिक दलों के पास विशाल संसाधन, संगठनात्मक ढांचा और प्रचार तंत्र मौजूद है। इसके मुकाबले निर्दलीय उम्मीदवारों के लिए जनता तक अपनी बात पहुंचाना आसान नहीं होता। यही कारण है कि अधिकांश चुनावों में निर्दलीय उम्मीदवारों की उपस्थिति सीमित दिखाई देती है।

राठी इस समस्या का समाधान भी सुझाते हैं। उनका कहना है कि जनता को उम्मीदवार का मूल्यांकन उसी प्रकार करना चाहिए, जैसे वह किसी डॉक्टर, शिक्षक या विशेषज्ञ का चयन करते समय उसकी योग्यता को महत्व देती है। धर्म, जाति, प्रचार और प्रभाव से ऊपर उठकर व्यक्ति के चरित्र, शिक्षा, सामाजिक योगदान और ईमानदारी को प्राथमिकता देनी चाहिए।

वह यह भी मानते हैं कि जनता के भीतर निस्वार्थ भाव से काम करने वाले लोगों के प्रति विश्वास की कमी पैदा हो गई है। वर्षों से अनेक राजनीतिक वादों और अनुभवों के कारण लोगों में संदेह की भावना बढ़ी है। ऐसे में किसी भी वैकल्पिक व्यवस्था को स्वीकार करने के लिए पहले जनविश्वास का निर्माण करना आवश्यक होगा।

नरेंद्र राठी का कहना है कि उनका उद्देश्य किसी पद, शक्ति या राजनीतिक लाभ को प्राप्त करना नहीं है। वह केवल एक ऐसी व्यवस्था की कल्पना करते हैं, जिसमें सामान्य नागरिक को उसका अधिकार मिले और ईमानदारी अपवाद नहीं, बल्कि व्यवस्था की अनिवार्यता बन जाए।



दिल्ली में धूमधाम से संपन्न हुआ मिस एंड मिस्टर ब्यूटीफ्लाई 2026 : सीज़न-2, फैशन और प्रतिभा का शानदार संगम बना आयोजन



नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में आयोजित 'मिस एंड मिस्टर ब्यूटीफ्लाई 2026 : सीज़न-2' का आयोजन बेहद भव्य, आकर्षक और सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम ने न केवल मॉडलिंग और फैशन जगत की उभरती प्रतिभाओं को मंच प्रदान किया, बल्कि उन युवाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बना जो ग्लैमर और फैशन इंडस्ट्री में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास, व्यक्तित्व और मंच प्रस्तुति का शानदार प्रदर्शन किया। पूरे आयोजन के दौरान ऊर्जा, रचनात्मकता और पेशेवर माहौल देखने को मिला।

इस भव्य कार्यक्रम में केवल मॉडल्स ही नहीं, बल्कि मेकओवर आर्टिस्ट, फैशन डिज़ाइनर, ग्रूमिंग एक्सपर्ट, कोरियोग्राफर, फोटोग्राफर और फैशन उद्योग से जुड़े कई पेशेवरों ने भी अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज कराई। इससे प्रतिभागियों को उद्योग के विभिन्न पहलुओं को समझने और अनुभवी लोगों से सीखने का अवसर मिला।आयोजन का उद्देश्य केवल विजेताओं का



चयन करना नहीं था, बल्कि युवाओं को एक ऐसा मंच उपलब्ध कराना था, जहां वे अपने आत्मविश्वास को मजबूत कर सकें और पेशेवर दुनिया की वास्तविकताओं से परिचित हो सकें। रैंप वॉक, व्यक्तित्व प्रदर्शन, संवाद कौशल और प्रस्तुति शैली ने दर्शकों का खूब ध्यान आकर्षित किया।आज के दौर में मॉडलिंग केवल आकर्षक व्यक्तित्व तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह आत्मविश्वास, अनुशासन, मेहनत और निरंतर सीखने का क्षेत्र बन चुकी है। ऐसे आयोजनों की सबसे बड़ी खासियत यही है कि वे नई प्रतिभाओं को पहचान दिलाने के साथ-साथ उन्हें सही दिशा भी प्रदान करते हैं।

कार्यक्रम में मौजूद कई प्रतिभागियों ने कहा कि इस मंच ने उन्हें अपने सपनों को नई उड़ान देने का अवसर दिया।

वहीं फैशन और ग्लैमर जगत से जुड़े विशेषज्ञों ने भी इसे उभरती प्रतिभाओं के लिए एक सकारात्मक और उपयोगी पहल बताया।

दिल्ली में आयोजित 'मिस एंड मिस्टर ब्यूटीफ्लाई 2026 : सीज़न-2' ने यह साबित कर दिया कि यदि प्रतिभा को सही मंच और उचित मार्गदर्शन मिले, तो युवा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बना सकते हैं।

यह आयोजन केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि सपनों, आत्मविश्वास और नए अवसरों का उत्सव बनकर सामने आया।

इस भव्य आयोजन के सफल संचालन में आयोजक संस्था निष्ठा फैशन, ए.के. ज़ेहरी फ़िल्म्स और एनटीएमजीएस (NTMGS) की महत्वपूर्ण भूमिका रही। तीनों संस्थाओं ने मिलकर उभरती प्रतिभाओं को एक पेशेवर और प्रेरणादायक मंच उपलब्ध कराया।

आयोजकों का उद्देश्य केवल एक प्रतियोगिता आयोजित करना नहीं, बल्कि युवाओं को फैशन, मॉडलिंग और मनोरंजन जगत में आगे बढ़ने के लिए सही दिशा और अवसर प्रदान करना था। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों को उद्योग से जुड़े विशेषज्ञों से जुड़ने, अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने और नए अवसरों की जानकारी प्राप्त करने का भी अवसर मिला।

आयोजन की सफलता ने यह साबित कर दिया कि दिल्ली प्रतिभाओं को पहचान दिलाने वाला एक बड़ा केंद्र बनता जा रहा है।



धूमधाम से हुआ संतोष पटेल की पुस्तक छायावाद के प्रवर्तक का विमोचन

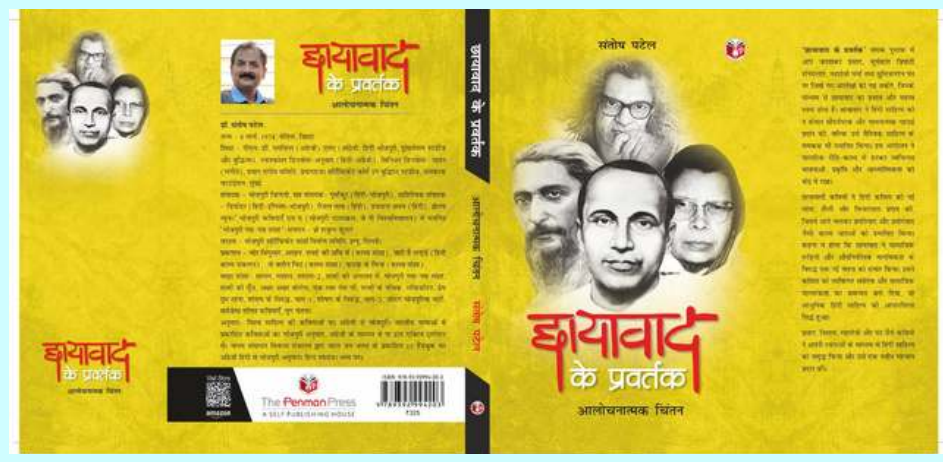
नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली स्थित निष्ठा क्लब हॉल साहित्य, संस्कृति और काव्य रस से सराबोर हो उठा, जब प्रख्यात लेखक संतोष पटेल की नई पुस्तक 'छायावाद के प्रवर्तक' का भव्य विमोचन समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में साहित्य जगत, शिक्षा क्षेत्र और सामाजिक जीवन से जुड़े अनेक गणमान्य अतिथियों और विशिष्ट हस्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। विमोचन समारोह के दौरान उपस्थित अतिथियों ने पुस्तक की विषयवस्तु, शोधपूर्ण प्रस्तुति और साहित्यिक महत्व की जमकर सराहना की। वक्ताओं ने कहा कि यह पुस्तक हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और साहित्य प्रेमियों के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज साबित होगी।कार्यक्रम की सबसे खास बात रही

कवियों का मनमोहक काव्य पाठ, जिसने पूरे माहौल को जीवंत बना दिया। एक के बाद एक प्रस्तुत हुई कविताओं ने उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया और हॉल देर तक तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा।







इस अवसर पर साहित्यकारों ने कहा कि आज के डिजिटल दौर में पुस्तकों के प्रति बढ़ती उदासीनता के बीच ऐसे आयोजन समाज में साहित्यिक चेतना को मजबूत करने का कार्य करते हैं। कार्यक्रम ने यह संदेश भी दिया कि साहित्य केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति का जीवंत दर्पण है।

कुल मिलाकर, 'छायावाद के प्रवर्तक' का यह विमोचन समारोह साहित्य, ज्ञान और रचनात्मक अभिव्यक्ति का एक यादगार उत्सव बनकर सामने आया।

ग्राम जलपुरा में अनंत श्री विभूषित परिव्राजिकचर्या 1008 महामंडलेश्वर स्वामी शैलेशानंद जी महाराज का भव्य आगमन, सनातन शिक्षा के लिए युवाओं को किया प्रेरित

ग्रेटर नोएडा। ग्राम जलपुरा स्थित शिव मंदिर आश्रम में 1008 श्री शैलजानंद जी महाराज के पावन आगमन पर श्रद्धा, भक्ति और उत्साह का अद्भुत संगम देखने को मिला। इस अवसर पर पूरा गांव आध्यात्मिक ऊर्जा और धार्मिक उल्लास से सराबोर नजर आया। ग्रामवासियों ने महाराज जी का गर्मजोशी और श्रद्धा के साथ भव्य स्वागत किया। कार्यक्रम की शुरुआत एक विशाल और आकर्षक शोभायात्रा के साथ हुई। 1008 श्री शैलजानंद जी महाराज रथ पर सवार होकर भक्तों को आशीर्वाद देते हुए पूरे क्षेत्र से गुजरे।इस दौरान सैकड़ों श्रद्धालु, महिलाएं, बुजुर्ग और युवा बड़ी संख्या में शामिल हुए। साथ ही वाहनों का एक लंबा और भव्य काफिला भी शोभायात्रा का हिस्सा बना, जिसने पूरे आयोजन की गरिमा और भव्यता को और बढ़ा दिया।

इस अवसर पर 1008 श्री शैलजानंद जी महाराज ने युवाओं को सनातन संस्कृति, भारतीय मूल्यों और नैतिक जीवन से जोड़ने का संकल्प लेते हुए







कहा कि आज की युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों, संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत से जोड़ना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।उन्होंने युवाओं से सनातन परंपराओं को समझने, जीवन में अनुशासन अपनाने और समाज निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम के दौरान ग्रामवासियों ने श्रद्धा और विश्वास के साथ शिव मंदिर आश्रम को महाराज जी को समर्पित किया। ग्रामीणों का कहना था कि यह आश्रम भविष्य में केवल पूजा-अर्चना का केंद्र नहीं रहेगा, बल्कि सनातन शिक्षा, संस्कार, आध्यात्मिक मार्गदर्शन और सामाजिक जागरूकता का महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा।पूरे आयोजन के दौरान भक्ति संगीत, जयघोष और धार्मिक उत्साह ने वातावरण को भक्तिमय बनाए रखा। ग्रामीणों ने इसे अपने गांव के इतिहास का एक गौरवपूर्ण और यादगार क्षण बताया।

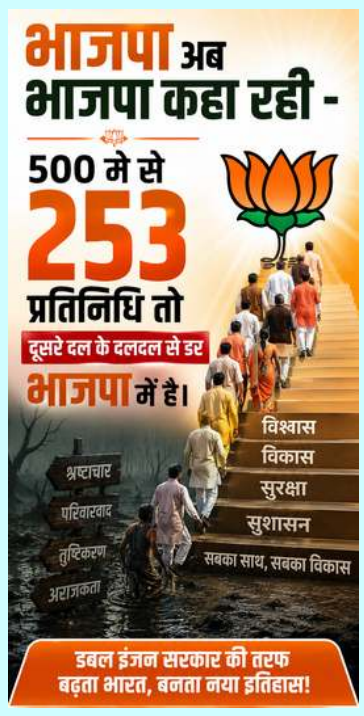
भाजपा अब भाजपा कहा रही - 500 मे से 253 प्रतिनिधि तो दूसरे दल के दलदल से डर भाजपा मे है।



धनंजय कुमार सिंह

भारतीय राजनीति का चरित्र पिछले कुछ दशकों में तेजी से बदला है। कभी विचारधारा आधारित राजनीति को लोकतंत्र की आत्मा माना जाता था, लेकिन समय के साथ दलों की सीमाएँ धुंधली पड़ती दिखाई दे रही हैं। आज राजनीतिक विमर्श में एक बड़ा प्रश्न बार-बार उठाया जा रहा है—क्या राजनीतिक दल अपनी मूल विचारधारा पर कायम हैं या वे केवल सत्ता प्राप्ति के मंच बनकर रह गए हैं?
इसी संदर्भ में सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को लेकर भी अनेक राजनीतिक विश्लेषक और विपक्षी दल यह प्रश्न उठा रहे हैं कि यदि बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि अन्य दलों से आकर भाजपा में शामिल हुए हैं, तो क्या भाजपा का मूल स्वरूप बदला है? यह बहस केवल भाजपा तक सीमित नहीं है, बल्कि भारतीय राजनीति की व्यापक प्रवृत्ति को भी दर्शाती है।

भारतीय राजनीति में दल-बदल कोई नई घटना नहीं है। स्वतंत्रता के बाद से ही नेताओं का एक दल छोड़कर दूसरे दल में जाना जारी रहा है। वर्ष 1967 में "आया राम, गया राम" की राजनीति ने इस प्रवृत्ति को राष्ट्रीय पहचान दी थी। इसके बाद दल-बदल विरोधी कानून भी बनाए गए, लेकिन राजनीतिक दलों के बीच नेताओं का आवागमन पूरी तरह नहीं रुका।
आज लगभग हर बड़ा राजनीतिक दल अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने के लिए दूसरे दलों के प्रभावशाली नेताओं को अपने साथ जोड़ने की रणनीति अपनाता है। ऐसे में भाजपा भी इस राजनीतिक संस्कृति से अछूती नहीं रही।
राजनीतिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि यदि किसी दल में बड़ी संख्या में दूसरे दलों से आए नेता प्रभावशाली पदों पर हों, तो स्वाभाविक रूप से उस दल की कार्यशैली, संस्कृति और प्राथमिकताओं पर भी उसका प्रभाव पड़ता है। भाजपा ने पिछले एक दशक में राष्ट्रीय राजनीति में अभूतपूर्व विस्तार किया है। जिन राज्यों में कभी उसका सीमित प्रभाव था, वहाँ भी उसने अपनी उपस्थिति मजबूत की है। इस विस्तार में पार्टी संगठन, वैचारिक आधार और नेतृत्व की भूमिका महत्वपूर्ण रही, लेकिन दूसरी ओर अनेक राज्यों में दूसरे दलों के नेताओं के शामिल होने से भी भाजपा को लाभ मिला। कई राज्यों में कांग्रेस, क्षेत्रीय दलों और अन्य पार्टियों के नेता भाजपा में शामिल हुए। इनमें ऐसे नेता भी रहे जो वर्षों तक भाजपा की विचारधारा के विरोधी माने जाते थे।
यहीं से बहस शुरू होती है कि क्या यह विस्तार वैचारिक विजय थी या राजनीतिक समावेशन की रणनीति?
भाजपा को लंबे समय तक कैडर आधारित दल माना गया है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पृष्ठभूमि से निकले कार्यकर्ताओं ने दशकों तक संगठन को मजबूत करने में योगदान दिया।
ऐसे में जब दूसरे दलों से आए नेताओं को तत्काल महत्वपूर्ण पद या चुनावी टिकट मिलते हैं, तो पुराने कार्यकर्ताओं के बीच असंतोष की भावना भी देखने को मिलती है।
कई राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि किसी भी दल की वास्तविक शक्ति उसके समर्पित कार्यकर्ता होते हैं। यदि कार्यकर्ताओं को यह महसूस होने लगे कि वर्षों की निष्ठा की तुलना में राजनीतिक प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, तो संगठनात्मक चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।भारतीय लोकतंत्र में चुनाव जीतना किसी भी राजनीतिक दल का प्रमुख लक्ष्य होता है। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि क्या चुनावी जीत के लिए विचारधारा से समझौता उचित है?
भाजपा स्वयं को राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पहचान और संगठनात्मक अनुशासन की राजनीति का प्रतिनिधि मानती रही है। आलोचकों का कहना है कि जब वैचारिक रूप से भिन्न पृष्ठभूमि के नेता बड़ी संख्या में शामिल होते हैं, तो दल की मूल पहचान प्रभावित हो सकती है।
वहीं भाजपा समर्थकों का तर्क है कि लोकतंत्र में हर नागरिक और नेता को अपने विचार बदलने तथा किसी भी दल में शामिल होने का अधिकार है। यदि कोई व्यक्ति किसी दल की नीतियों से सहमत होकर उसमें शामिल होता है, तो उसे स्वीकार करना लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है।
राजनीतिक विशेषज्ञों का कहना है कि दल-बदल की राजनीति किसी एक दल तक सीमित नहीं है। देश के लगभग सभी बड़े दलों ने समय-समय पर दूसरे दलों के नेताओं को अपने साथ जोड़ा है। कांग्रेस, समाजवादी दल, क्षेत्रीय दल तथा अन्य राष्ट्रीय दल भी राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार नेताओं का स्वागत करते रहे हैं। इसलिए इस बहस को केवल किसी एक दल के संदर्भ में नहीं, बल्कि भारतीय राजनीति की समग्र प्रवृत्ति के रूप में देखा जाना चाहिए।
दल-बदल पर सबसे बड़ी चिंता जनादेश को लेकर उठती है। जब कोई नेता किसी एक दल के टिकट पर चुनाव जीतकर बाद में दूसरे दल में शामिल हो जाता है, तो मतदाताओं के मन में यह प्रश्न उठता है कि उनका जनादेश किसके पक्ष में था—व्यक्ति के या दल के?
इसी कारण कई बार दल-बदल को लेकर नैतिक बहस भी होती रही है। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि यदि कोई निर्वाचित प्रतिनिधि दल बदलता है, तो उसे पुनः जनता के बीच जाकर नया जनादेश प्राप्त करना चाहिए।
राजनीति में अवसरवाद का आरोप नया नहीं है। सत्ता परिवर्तन के साथ नेताओं का रुख बदलना भी भारतीय राजनीति की परिचित तस्वीर रही है।
आलोचक कहते हैं कि जब कोई नेता वर्षों तक किसी दल की आलोचना करता है और बाद में उसी दल में शामिल हो जाता है, तो जनता के मन में स्वाभाविक प्रश्न उठते हैं।
वहीं समर्थकों का कहना है कि राजनीति में विचारों का परिवर्तन संभव है और लोकतंत्र इसी स्वतंत्रता पर आधारित है।
आज का मतदाता पहले की तुलना में अधिक जागरूक और सूचनासंपन्न है। सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यमों ने राजनीतिक गतिविधियों को जनता के सामने अधिक पारदर्शी बना दिया है। जनता अब केवल नारों या भावनात्मक अपीलों से संतुष्ट नहीं होती, बल्कि नेताओं के पुराने और वर्तमान बयानों की तुलना भी करती है। ऐसे में राजनीतिक दलों पर अपनी विश्वसनीयता बनाए रखने की बड़ी जिम्मेदारी है।
विश्वसनीयता बनाए रखने की बड़ी जिम्मेदारी है।
राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि किसी भी दल की दीर्घकालिक सफलता केवल चुनावी जीत से नहीं, बल्कि संगठनात्मक स्थिरता और वैचारिक स्पष्टता से तय होती है।
लोकतंत्र की कसौटी पर राजनीति
भारतीय लोकतंत्र की सुंदरता उसकी विविधता में निहित है। विभिन्न विचारधाराएँ, अनेक दल और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा लोकतांत्रिक व्यवस्था को मजबूत बनाते हैं।
लेकिन यह भी आवश्यक है कि राजनीतिक दल अपने मूल सिद्धांतों और सार्वजनिक जवाबदेही को बनाए रखें। यदि राजनीति केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम बन जाए, तो लोकतंत्र की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।



NATION Live
खबरों की खबर

Shape Your Future with Information Technology (IT)

The world is evolving at a breathtaking pace, and at the absolute center of this massive digital transformation is Information Technology (IT). For students today, IT is no longer just an academic subject or a simple career choice—it is a superpower. It gives you the unique capability to solve complex, real-world problems, drive global innovation, and build tools that can change billions of lives.
The IT landscape is incredibly vast and accommodates diverse interests. If you love coding and logic, Software Development and Full-Stack



Engineering are perfect for you. If you are fascinated by patterns and prediction, Artificial Intelligence (AI), Machine Learning, and Data Science offer thrilling opportunities. Meanwhile, fields like Cybersecurity protect global networks from digital threats, and Cloud Computing manages the infrastructure powering the modern internet.
The best part? Tech professionals aren't restricted to IT companies; they are actively shaping industries like healthcare, gaming, finance, and space exploration.

निष्ठा क्लब
अपनी पहचान बनाइए
अपना करियर और
आय बढ़ाइए!
क्या आपके पास कोई विशेष प्रतिभा हैं?
या आप अपने करियर को नई ऊँचाइयों तक ले जाना चाहते हैं?
यह सिर्फ एक क्लब नहीं,
बल्कि आपके टैलेंट, पहचान और आय
को बढ़ाने वाला एक सशक्त मंच है।
अपने टैलेंट को पहचान दिलाएँ, करियर को नई उड़ान दें और
मल्टीपल इनकम के अवसर प्राप्त करें। निष्ठा क्लब के साथ जुड़कर
अपनी पर्सनल ब्रांडिंग, प्रमोशन और नेटवर्क को देश-दुनिया तक पहुँचाएँ।
गायक | अभिनेता | लेखक | कवि |
संगीतकार | प्रोफेशनल | कलाकार | उद्यमी |
विशेष प्रतिभा वाले सभी लोगों का स्वागत है।

+91 73033 98733
https://nistha.club
किसी भी आयु का कोई भी व्यक्ति निष्ठा क्लब का सदस्य बन सकता है।

ए.के. ज़हरी फ़िल्म्स: जहां बच्चों ने सीखा अभिनय का जादू, आत्मविश्वास को मिली नई उड़ान

नई दिल्ली। आज के डिजिटल दौर में जहां बच्चे मोबाइल और स्क्रीन की दुनिया में सिमटते जा रहे हैं, वहीं राजधानी दिल्ली के पीतमपुरा में आयोजित ए.के. ज़हरी फ़िल्म्स के तीन दिवसीय नाट्य एवं अभिनय ग्रीष्मकालीन शिविर ने बच्चों को रचनात्मकता, आत्मविश्वास और मंचीय अभिव्यक्ति की एक नई दुनिया से परिचित कराया। यह शिविर केवल अभिनय सीखने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास का एक प्रेरणादायक उत्सव बनकर उभरा।

करीब 10 से 15 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ इस शिविर में भाग लिया और अभिनय की बारीकियों को समझने का अवसर प्राप्त किया। शिविर का संचालन प्रसिद्ध फ़िल्म निर्देशक आकाश रोहिला ने किया, जिन्होंने बच्चों को अभिनय के तकनीकी और भावनात्मक पहलुओं से अवगत कराया।

तीन दिनों तक चले इस प्रशिक्षण शिविर में बच्चों को संवाद अदायगी, चेहरे के भाव, शारीरिक हाव-भाव, स्वर नियंत्रण, कैमरे के सामने प्रस्तुति और भावनात्मक अभिनय जैसी महत्वपूर्ण विधाओं का प्रशिक्षण दिया गया। मनोरंजक गतिविधियों और व्यावहारिक अभ्यासों के माध्यम से बच्चों ने अभिनय को केवल एक कला नहीं, बल्कि स्वयं को अभिव्यक्त करने का माध्यम समझा।

शिविर के अंतिम दिन बच्चों ने मंच पर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। उपस्थित अभिभावकों और अतिथियों ने बच्चों के आत्मविश्वास और प्रस्तुति की भरपूर सराहना की। कई बच्चों ने यह साबित कर दिया कि यदि सही मार्गदर्शन और अवसर मिले, तो नई पीढ़ी किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती है।

आयोजकों ने कहा कि आज के समय में केवल पढ़ाई ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि बच्चों में रचनात्मक सोच, संवाद कौशल और आत्मविश्वास विकसित करना भी बेहद आवश्यक है। इस सफल आयोजन में निष्ठा ध्वनि, नेशन लाइव न्यूज़ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, एम.पी. बस्ती का योगदान भी सराहनीय रहा। आयोजकों ने सभी सहयोगी संस्थाओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके सहयोग के बिना इस कार्यक्रम को सफल बनाना संभव नहीं था।पीतमपुरा में आयोजित यह तीन दिवसीय शिविर बच्चों के लिए सीखने, समझने और अपनी छिपी हुई प्रतिभा को पहचानने का एक यादगार अवसर साबित हुआ। इसने न केवल अभिनय की नई तकनीकें सिखाईं, बल्कि बच्चों को आत्मविश्वास के साथ अपने सपनों की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा भी दी।

तीन दिन, अनगिनत सीख और भरपूर आत्मविश्वास



आनंद विहार रेलवे स्टेशन: पार्किंग या जनता की जेब पर खुली लूट?

नई दिल्ली। राजधानी के सबसे व्यस्त रेलवे स्टेशनों में शामिल आनंद विहार रेलवे स्टेशन पर यात्रियों की परेशानी अब सफर से नहीं, बल्कि पार्किंग व्यवस्था से शुरू हो रही है। यहां हालात ऐसे हैं कि वाहन लेकर आने वाली जनता पहले ट्रैफिक जाम में फंसती है, फिर पार्किंग में जगह ढूंढती है और आखिर में मनमाने शुल्क का शिकार बन जाती है।यात्रियों का आरोप है कि एंट्री से लेकर एग्जिट तक पहुंचने में ही 25 से 30 मिनट निकल जाते हैं, क्योंकि अंदर कोई सुव्यवस्थित व्यवस्था दिखाई नहीं देती। लेकिन जैसे ही 30 मिनट पूरे होते हैं, 200 रुपये तक का भारी शुल्क थमा दिया जाता है।

लोगों का कहना है कि यह पार्किंग नहीं, बल्कि मजबूर यात्रियों से खुली वसूली का केंद्र बन चुका है। स्थिति को और बदतर बनाने में स्टेशन के बाहर अवैध रूप से खड़ी रेहड़ी-पटरी और बेतरतीब यातायात भी बड़ा कारण हैं। सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या प्रशासन को यह सब दिखाई नहीं देता, या फिर सब कुछ देखकर भी अनदेखा किया जा रहा है? ट्रैफिक पुलिस की मौजूदगी के बावजूद जाम रोज़ का दृश्य बन चुका है, लेकिन समाधान कहीं नजर नहीं आता।



आनंद विहार रेलवे स्टेशन का मुख्य द्वार या रोज़ का रणक्षेत्र?

अब जनता पूछ रही है कि आखिर पार्किंग का पैसा सुविधा का लिया जा रहा है या अव्यवस्था का? अगर यही हाल रहा, तो यात्रियों का सफर स्टेशन पहुंचने से पहले ही परेशानी और लाचारी में बदलता रहेगा।

अभिनय, आत्मविश्वास और रचनात्मकता का संगम





डीएलसीएल सीजन-17 (वर्ष 2026) का शानदार आगाज़

डीएलसीएल सीजन-17 (वर्ष 2026) का भव्य शुभारंभ उत्साह और उमंग के साथ किया गया। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारत के पूर्व क्रिकेटर एवं भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व मुख्य चयनकर्ता Chetan Sharma ने ट्रॉफी का अनावरण कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। डीएलसीएल पिछले 15 वर्षों से सफलतापूर्वक क्रिकेट लीग का आयोजन करता आ रहा है और युवा खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का एक उत्कृष्ट मंच प्रदान कर रहा है। इस वर्ष लीग में अंडर-12, अंडर-14, अंडर-16, अंडर-19 एवं अंडर-23 आयु वर्ग की कुल 40 टीमें भाग ले रही हैं, जिनमें लगभग 600 खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं।

सभी आयु वर्गों के मैच कुल पाँच मैदानों पर आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें Rashtriya Swabhiman DDA Khel Parisar, PNP Khel Parisar, SKV Khel Maidan, Green Field Khel Maidan एवं Ghevra Cricket Ground शामिल हैं।

इस अवसर पर चेतन शर्मा ने खिलाड़ियों के लिए विशेष क्रिकेट प्रशिक्षण शिविर (कैम्प) आयोजित करने का आश्वासन दिया। वहीं डीएलसीएल के चेयरमैन गणेश दत्त ने लीग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को प्रायोजित (स्पॉन्सर) करने का वादा किया।डीएलसीएल का उद्देश्य युवा खिलाड़ियों को बेहतर अवसर, उच्च स्तरीय प्रतिस्पर्धा और पेशेवर मार्गदर्शन प्रदान कर उन्हें राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में सहयोग करना है। यह लीग प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है।







डीएलसीएल सीजन-17 (वर्ष 2026) शुभारम्भ की झलकियां